٧٨٦/٩٢

نقش تحفۂ روحانی وحل المشکلات

مَعَ اسۡمِ اللّٰهِ الۡمَلِكِ السَّلٰمِ

م	ح	م	د	صلی اللہ علیہ وسلم
ح	م	د	م	صلی اللہ علیہ وسلم
م	د	م	ح	صلی اللہ علیہ وسلم
د	م	ح	م	صلی اللہ علیہ وسلم

اس نقش کو دیکھنے والے کی
ہر مشکل حل ہوگی انشاءاللہ

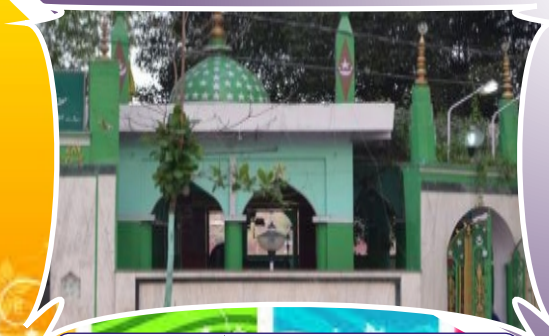

آستانہ حضرات مخدومین سادات چودہوں پیراں (علیہم الرحمۃ والرضوان) الہ آباد

सलातुल मीमिलअरबईन (5)
दुरूदे चहल मीम

«पेशकश»

बमौक़ा रजबुल्मुरज्जब 1437हि०
बफ़ैज़े रूहानी सय्यिदुना मोह़युद्दीन
व सय्यिदुना मोईनुद्दीन व हज़रात
मख़्दूमीन सादात चौदहों पीराँ रज़ियल्लाहु अन्हुम

मोह़म्मद अज़ीज़ सुल्तान नाचीज़

बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम

सुबहान क ला इलाह इल्लल्लाहु सुल्तान क या मन हुवल्लाहु लाइला ह इल्ला हुवस्समी उ़ल बसीरु सल्लि व सल्लिम व बारिक मुफ़ह्हिलवँ व मुअ़ज़्ज़िमवँ व मुक्रिमवँ व मुर्फ़िअ़म्बि सि़फ़ति क़ुदरतिकल कामिलति अ़ला हुक्मि क व नूरिकल मुमज्जदिल्लज़ी नव्वर्त बिहिल आ़लमीन व अव्वलिकल ख़ल्क़ि व ऐ़नि नूरिल मकानि वल्लामकानिल्लज़ी कुल्त फ़ी शानि अ़ब्दीयतिही सुब्ह़ानल्लज़ी अस्रा बिअ़ब्दिही लैलम्मिनल मस्जिदिल ह़रामि इलल मस्जिदिल अक़्स़ल्लज़ी बारक्ना ह़ौलहू लिनुरियहू मिन आयातिना इन्नहू हुवस्समीउ़ल्बसीरु व अ र ऐतहुल आयतल कुब्रा व अनल्तहुल ग़ायतल क़ुस्वा व अकरम्तहू बिल्मुख़ात़बति वल मुराक़बति वल मुशाफ़हति वल मुशाहदति वल मुआ़यनति बिल ब स़रि व ख़स़्स़स्तहू बिल्वसीलतिल उ़ज़्मा वशफ़ाअ़तिल कुबरा यौमल फ़ ज़इल अक्बरि फ़िल मह़शरि व ज मअ़ त लहू जवामिअ़ल कलिमि व जवाहिरल ह़िकमि व जअ़ल्त वालिदैहि अर्फ़अ़ल वालिदी न व आलहू अर्फ़अ़ल आलि व अस़्ह़ाबहू अर्फ़अ़ल अस़्ह़ाबि व उम्म तहू अर्फ़अ़ल उममि व हु व नूरुकल ह़बीबुल अ ह़ दु मोह़म्मदुर्रसू लुल्लाहि व अ़ला वालिदैहि व आलिही व अहलि बैतिही व अस़्ह़ाबिही बिकुल्लि शअनिन जदीदिन इला अ बदिल आबादि।

तर्जमा: अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बड़ा मेहरबान निहायत रह़म वाला है।

पाकी है तेरी नहीं कोई मअ़बूद सिवाए अल्लाह के बादशाहत है तेरी ऐ वह जो अल्लाह है नहीं कोई मअ़बूद सिवाए उस के जो सुनने वाला देखने वाला है तू खूब खूब भेज फ़ज़ीलतो अ़ज़मत व करामत और बुलन्दी बख़्शने वाला दुरूदो सलाम और बरकत अपनी सि़फ़त क़ुदरते कामेला के साथ अपने हुक्म पर और अपनी बुज़ुर्गी वाले उस नूर पर जिनके नूर से रौशन किया तूने सारे जहान को और अपनी पहली ख़िल्क़त पर और उस मकानो लामकान के नूर पर जिन्की शाने अ़ब्दीयत में फ़रमाया तूने "पाकी है उसे जो लेगया अपने बन्दे को रातों रात मस्जिदे ह़राम से मस्जिदे अक़्स़ा तक जिस के गिर्द इगिर्द हम ने बरकत रखी ताकि हम उसे अपनी अ़ज़ीम निशानियाँ दिखाएं बेशक वह सुनने वाला देखने वाला है" और दिखाया तूने उन्हें बड़ी निशानी, पहुँचाया तूने उन्हें निहायत अअ़ला मर्तबा को और बुज़ुर्गी दी तूने उन्हें बात करके निगरानी कर के, रूबरू होकर, हुज़ूरी देकर आँख से दिखा कर, और ख़ास़ किया तूने उन्हें अ़ज़ीम मर्तबए वसीला के साथ और बड़ी शफ़ाअ़त के साथ बड़े ख़ौफ के दिन मह़शर में और जमअ़ किया तूने उन के वास्ते मअ़नाख़ेज़ कलमात और हिकमतों के जवाहिर और बनाया तूने उन के वालिदैन को तमाम वालिदैन में सबसे ज़्यादा बुलंद और उन की आल को तमाम आल में सबसे ज़्यादा बुलंद उन के अस़्ह़ाब को तमाम अस़्ह़ाब में सबसे ज़्यादा बुलंद और उन की उम्मत को तमाम उम्मतों में सबसे ज़्यादा बुलंद और वह तेरे यक्ता नूरे ह़बीब मोह़म्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं। और आप ﷺ के वालिदैन पर, आप ﷺ की आल पर आप ﷺ की अहले बैत पर और आप ﷺ के अस़्ह़ाब पर हर नई शान के साथ हमेश्गी त़ौर पर।

नोट: जो शख़्स़ इस दुरूद को ४०/७/३ बार सुब्ह़ो शाम अपना मअ़मूल बनाएगा उसे मुग़ीबात की समाअ़तो बस़ारत नस़ीब होगी दोनों जहाँ में अज़मतो बुलंदी ह़ासि़ल होगी और उस पर आ़लमे अरवाह़ के अबवाब खुलेंगे और उस की हर दुआ़ क़बूल होगी। इन्शाअल्लाहु तआ़ला।